तस्मान्मुच्ये यथा तात संविधातुं तथार्हसि ।

इक्ष्वाकूणां दुरापेऽर्थे त्वदधीना हि सिद्धयः ।।72।।

अन्वय तात ! तस्मात् यथा मुच्ये तथा संविधातुम् अर्हसि, हि इक्ष्वाकूणां दुरापे अर्थे सिद्धयः त्वदधीनाः।

अनुवाद हे गुरु ! अतएव जिससे कि मैं उस (पितृऋण) से मुक्त हो सकूं ऐसा उपाय आप करें क्योंकि इक्ष्वाकुवंशी राजाओं के कठिन कार्यों की सिद्धियाँ (सफलताएँ) आपके अधीन हैं।

टिप्पणियाँ

तस्मात् उससे, पैतृक ऋण से।

यथा येन उपायेन, जिस तरह से।

तथा तम् उपायम्, उसी तरह।

संविधातुम् कर्तुम्, करना।

अर्हसि योग्योऽसि, आपको (करना) चाहिए।

मुच्ये धातु मुच् कर्मणि लट्, उत्तम पुरुष एकवचन। छुटकारा पाऊँ, मुक्त होऊँ। यहाँ लट् का प्रयोग विधि के अर्थ में हुआ है।

दुरापे (अर्थे) उन विषयों या कार्यों के बारे में जिनको प्राप्त करना कठिन है अर्थात् दुस्साध्य कार्यों के विषय। दुःख ल्, सप्तमी एकवचन। इसी तरह के भाव की

अभिव्यंजना कहीं और भी हुई है.''सोढुं न तत्पूर्वमवर्णमीशे आलानिकं स्थाणुमिव द्विपेन्द्रः।''

त्वदधीनाः त्वयि अधि इति त्वदधीनाः (सप्तमी तत्पुरुष)। आपके अधीन हैं।